पाठ - 2
हाथि वालों का क़िस्सा

الدرس الثاني - هندي
قصة أصحاب الفيل

अबरहा हबशा जा यमन म शाह हबशा नजाशा का नायब था, देखा कि अरब मक्का म माजूद खाना काबा का हज करते हैं और उसका सम्मान करते हैं और दूर दूर के इलाक़ों से आकर वहां फ़िदिया पेश करते हैं तो उसने सनआ में एक बहुत बड़ा चर्च बनवाया, ताकि वह अरब के हाजियों का रुख़ उसकी तरफ़ मोड़ सके। इस बात का पता क़बाइल अरब में से एक क़बीला बनू कनाना के किसी आदमी को लगा तो वह रात में वहां गया और उसकी दीवारों को गन्दगियों से खराब कर दिया। अबरहा को जब इस बात का पता चला तो वह भड़क गया और बहुत अधिक नाराज़ हुआ। उसने एक बड़ा लशकर तैयार किया जिसमें 60 हजार सैनिक थे उनके साथ 9 हाथी थे, अबरहा इस लशकर को लेकर खाना काबा को ध्वस्त करने के इरादे से मक्का की ओर चल पड़ा। अपने लिए उसने एक बड़ा हाथी चुना। उसने अपने लशकर को मक्का में दाखिल होने के लिए तैयार किया लेकिन हाथी बैठ गया और आगे नहीं बढ़ा। वे लोग उसका रुख दूसरी ओर करते तो उठ कर चलने लगता और काबा की तरफ़ करते तो बैठ जाता।

इसी हाल में थे कि अल्लाह ने उन पर अबाबील चिड़ियों को भेजा, जो उन पर छोटे–छोटे पत्थर बरसा रही थीं जिनको जहन्नम की आग में तपाया गया था। हर चिड़िया तीन पत्थर लिए हुए थी। एक पत्थर अपनी चोंच में, और चने की तरह दो पत्थरों को अपने पांव में, ये पत्थर जिसको लगते, उसके जिसमानी अंग कटकर गिरने लगते और उसके बाद वह मर जाता था। अतएव वे लोग रास्ते में गिरते पड़ते भाग खड़े हुए। अबरहा को अल्लाह ने एक बीमारी का शिकार बना दिया जिससे उसकी उंगलियां गिर गयीं और वह सनआ तक नहीं पहुंच सका की वह हलाक हो गया। उस समय क़ुरैश इस लशकर से डर कर अलग अलग घाटियों में बिखर गये थे और पहाड़ों में जा छुपे थे। जब वह लशकर अज़ाब का शिकार हो गया तो वे सही और ठीक ठाक अपने घरों में वापस लौट आए। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैदाइश से पचास दिन पहले यह घटना घटित हुई थी।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रज़ाअत

जब आपकी पैदाइश हुई तो आपके चचा अबू लहब की बान्दी ने आपको दूध पिलाया। इससे पहले उन्होंने आपके चचा हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रजियल्लाहु अन्हु को भी दूध पिलाया था। इस तरह से वे रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रज़ाई भाई हुए। चूंकि अरबों का दस्तूर था कि वे अपने बच्चों को दूध पिलाने के लिए देहाती औरतों को तलाश किया करते थे ताकि उनकी अच्छे ढंग से जिसमानी परवरिश हो सके। इस तरह से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दूसरी दूध पिलाने वाली औरत के पास पहुंच गए। जिस समय आपकी पैदाइश हुई मक्का में बनु साअद की औरतों का एक गिरोह आया ताकि दूध पिलाने के लिए बच्चों को तलाश करे। औरतें घरों में घूमने लगीं। अतएव वे वापस आमिना के घर पहुंची और यतीम बच्चे और कम मज़दूरी को ही क़ुबूल कर लिया। हलीमा अपने पति के साथ एक दुबली पतली सुस्त रफ़्तार गधी पर बैठ कर मक्का आयी थीं। वापसी के मौक़े पर जैसे ही रसूल अकरम को अपनी गोद में रखती हैं गधी तेज़ रफ़्तारी के साथ दौड़ने लगती है और तमाम जानवरों को पीछे छोड़ देती है जिसे देखकर रास्ते के साथी और मिलने जुलने वाले हैरत में पड़ जाते हैं।

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दो साल तक हलीमा साअदिया के पास रहे वे आप को अपने यहां और रखने की इच्छुक थी क्योंकि वे बहुत सी विचित्र चीज़ें और हालतें इस बच्चे की वजह से पेश आते हुए देख रही थीं। दो साल पूरे होने पर हलीमा नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को लेकर आपकी मां और दादा की सेवा में हाज़िर हुईं। इससे पहले हलीमा ने रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बरकत को देखा था जिसने उनके हालात बदल दिए थे। इसी वजह से उन्होंने रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दूसरी बार अपने साथ ले जाने के लिए आमिना से आग्रह किया। अतएव आमिना ने उन्हें इसकी इजाज़त दे दी। हलीमा बच्चे को अपने साथ लिए बनू साअद पहुंचीं। वे बड़ी खुश थीं और अपने सौभाग्य पर खुशी महसूस कर रही थीं।